Mohanlal Sukhadia University
Udaipur (Raj.)

Syllabus

Scheme of Examination and Courses of Study

FACULTY OF HUMANITIES

Helpstudentpoint.com

M.A. JAINOLOGY AND PRAKRIT SAHITYA

Previous Examination : 2004-2005

Final Examination : 2005-2006

Edition : 2004 **Price : Rs.20/-**

Published by :
Mohanlal Sukhadia University
Udaipur

Printed at :
National Printers
124, Chetak Marg, Udaipur
Phone : 2523830, 2561030
"Offset House" Bhuwana
Phone : 2440994

NOT FOR SALE
FOR OFFICE USE ONLY

POST GRADUATE PROGRAMME

1. At each of the Previous and Final Year Examination in a subject, a candidate must obtain for a pass (i) at least 36 % marks of the aggregate marks in all the papers prescribed at the examination, and (ii) atleast 36% marks in practical, wherever prescribed, at the examination; provided that if a candidate fails to secure 25% marks in each individual paper of theory at any of the examination and also in the Dissertation; wherever prescribed, he/she shall be deemed to have failed at the examination, notwithstanding his/her having obtained the minimum percentage of marks required in the aggregate for the examination. Division will be awarded at the end of the Final Examination of the combined marks obtained at the Previous and the Final Examinations taken together as noted below. No Division will be awarded at the Previous Examination.

First Division	: 60 Percent	of the total aggregate
Second Division	: 48 Percent	marks of Previous and
Third Division	: 36 Percent	Final year taken together

Note : The candidate is required to pass separately in theory and practicals.

NOT FOR SALE
FOR OFFICE USE ONLY

2. Dissertation may be offered by regular students only in lieu of one paper of Final Year Examination as prescribed in the syllabus of the subject concerned. Only such candidates will be permitted to offer dissertation who have secured atleast 50% marks in the aggregate at the previous examination.

Note: Dissertation shall be type-written and shall be submitted in triplicate, so as to reach the Controller of Examinations atleast two weeks before the commencement of Examination.

3. There shall be atleast eight theory in Post-Graduate Examination, 4 in Previous and 4 in Final year examinations of 100 marks each unless and otherwise prescribed. The non-credit papers wherever prescribed will remain as such. The marks of these non-credit papers will not be counted for division but passing in the same is compulsory.

4. Each theory paper will be of three hours duration.

5. Wherever practicals are prescribed the scheme will be included in the syllabus.

6. A candidate who has completed a regular course of study for one academic year and Passed M.A./ M.Sc./M.Com. Previous Examination of the university shall be admitted to the Final Year

Helpstudentpoint.com

Examination for the degree of Master of Arts / Master Of Science / Master of Commerce provided that he / she has passed in atleast 50% of the papers at the previous examination by obtaining atleast 36% marks in each such paper.

(a) For reckoning 50% of the papers at the previous examination, practical will be included and one practical will be counted as one paper.

(b) Where the number of papers prescribed at the previous examination is an odd number it shall be increased by one for the purpose of reckoning 50% of the paper.

(c) Where a candidate fails for want of securing minimum aggregate marks but secured 36% marks in atleast 50% of the papers, he/she will be exempted from re-appearing in those papers in which he/she has secured 36% marks.

(d) Where the candidate secures requisite minimum percentage in the aggregate of all the papers but fails for want of the requisite minimum percentage of marks prescribed for each individuals paper he/she shall be exempted from re-appearing in such paper (s) in which he / she has secured atleast 25% marks.

7. A candidate who has declared fail at the Final Year Examination for the degree of Master of Science / Arts, Commerce shall be exempted

from re-appearing in a subsequent year in the following papers :

(a) Where a candidate fails for want of securing the minimum percentage in the aggregate marks, he/she shall be exempted from re-appearing in such paper (s) Practical (s). Dissertation in which he/she has secured atleast 36% marks; provided he/she is passing in atleast 55% of the papers. (Here passing in each paper requires 36% marks).

(b) Where a candidate secures the minimum requisite including dissertation wherever prescribed but fails for want of minimum percentage of marks prescribed for in each individual paper / dissertation, he / she shall be exempted from reappearing in such paper (s) dissertation in which he/she has secured atleast 25% marks provided he/she is passing in atleast 50% of the paper (here passing in each paper requires 25% marks)

जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य एम. ए. पाठ्यक्रम 2004–2005; 2006–2007

(सामान्य निर्देश)

विश्वविद्यालय के परीक्षा सम्बन्धी नियमों के साथ निम्नांकित निर्देश ध्यातव्य हैं :–

1. प्रत्येक प्रश्नपत्र में पाठ्यक्रम के अनुसार प्रायः पांच प्रश्न सौ प्रतिशत आंतरिक विकल्प के साथ पूछे जायेंगे, जिनके उत्तर तीन घण्टे की अवधि में दिये जा सकते हैं। प्रश्नपत्रों में प्रश्न हिन्दी में दिये जायेंगें, पर परीक्षार्थी अपने उत्तर हिन्दी अथवा अंग्रेजी में लिख सकेंगें ।

2. आठ प्रश्नपत्रों में से पूर्वार्द्ध में चार एवं उत्तरार्द्ध में दो प्रश्नपत्र अनिवार्य हैं। 7 वां एवं 8 वां प्रश्नपत्र (अ) आगम एवं सिद्धांत अथवा (ब) प्राकृत व्याकरणशास्त्र अथवा (स) अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य वैकल्पिक हैं। स्वयंपाठी परीक्षार्थी वही वैकल्पिक ग्रुप ले सकेंगें, जो नियमित छात्रों के लिए विभाग में उस सत्र में चल रहा होगा ।

3. उत्तरार्द्ध के 7 वें अथवा 8 वें वैकल्पिक प्रश्नपत्रों में से किसी एक प्रश्नपत्र के स्थान पर विभाग की स्वीकृति से वे नियमित विद्यार्थी लघु शोध–प्रबन्ध (DISSERTATION) प्रस्तुत कर सकेंगे, जिन्होंनें पूर्वार्द्ध में 55 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त किये हैं। इसके सम्बन्ध में अन्य नियम विश्वविद्यालय के अनुसार होंगे ।

Helpstudentpoint.com

4. स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कोई भी व्यक्ति अपने ज्ञानवर्द्धन के लिए स्वयंपाठी परीक्षार्थी के रूप में एम ए. प्राकृत पाठ्यक्रम के किसी भी एक या दो प्रश्नपत्रों या किसी एक ग्रुप की परीक्षा विश्वविद्यालय के नियमानुसार दे सकता है। इसके लिए उसे केवल अंक–सूची प्रदान की जायेगी।

5. परीक्षार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे देश के प्रमुख पाण्डुलिपि भण्डारों एवं अध्ययन केन्द्रों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करें। इसके लिए उनके अध्ययन–काल में विश्वविद्यालय के सहयोग से इन केन्द्रों की कम से कम एक शैक्षणिक यात्रा आवश्यकतानुसार अपेक्षित है ।

6. पाण्डुलिपि – सम्पादन एवं अन्य प्रश्नपत्रों से सम्बन्धित विशेषज्ञ विद्वानों के आवष्यकतानुसार प्रत्येक सत्र में कम से कम पांच विशेष व्याख्यानों का आयोजन परीक्षार्थियों को ज्ञान–वृद्धि के लिए विश्वविद्यालय के सहयोग से किया जाना अपेक्षित है ।

7. सत्र 2002–03 से इस एम. ए. की परीक्षा विश्वविद्यालय की नई परीक्षा प्रणाली के अनुसार होगी।

(खण्ड–अ)

इस भाग में दस वस्तुनिष्ठ लघुउत्तरात्मक प्रश्न होंगे। प्रत्येक इकाई में से दो प्रश्न होंगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। ये दस प्रश्न विकल्प रहित होंगे। (10 अंक)

(खण्ड–ब)

इस भाग में पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से दो प्रश्न पूछे जायेंगे। कुल दस प्रश्न होंगे जिनके विकल्प भी इसी इकाई से होंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा। इन प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों तक दिये जा सकते हैं। (30 अंक)

(खण्ड–स)

इस भाग में चार विवेचनात्मक प्रश्न सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से बनाये जायेंगे, जिनमें से दो प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 500 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का होगा। इन प्रश्नों में एक प्रश्न के दो भाग भी हो सकते हैं। (30 अंक)

Helpstudentpoint.com

पाठ्यक्रम–विवरण

एम. ए. जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य 2004–2005

पूर्वार्द्ध (प्रथम वर्ष) सत्र 2004–05

प्रश्नपत्र प्रथम : कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा

द्वितीय : प्रहसन, सट्टक एवं पालि

तृतीय : अर्द्धमागधी एवं प्राकृत–अपभ्रंश कवि

चतुर्थ : शौरसेनी एवं महाराष्ट्री

उत्तरार्द्ध (द्वितीय वर्ष) सत्र 2005–06

पंचम : पाण्डुलिपि –सम्पादन, छन्द एवं शिलालेख

षष्ठ : व्याकरण एवं भाषा विज्ञान

वैकल्पिक ग्रुप

(अ) जैन आगम एवं सिद्धान्त

सप्तम : जैन आगम, ध्यान एवं योग

अष्टम : जैन सिद्धान्त एवं दर्शन

अथवा

(ब) प्राकृत व्याकरण शास्त्र

सप्तम : आर्ष प्राकृत एवं हेम–शब्दानुशासन

अष्टम : प्राकृत एवं हेम–शब्दानुशासन

अथवा

(स) अपभ्रंश भाषा एवं साहित्य

सप्तम : अपभ्रंश साहित्य (प्रथम)

अष्टम : अपभ्रंश साहित्य (द्वितीय)

Helpstudentpoint.com

जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य एम. ए.
पाठ्यक्रम 2004–2005; 2005–2006

विस्तृत विवरण

पूर्वार्द्ध सत्र–2004–2005, परीक्षा 2005

प्रश्नपत्र प्रथम : कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा

100 अंक

इकाई एक — 20 अंक

1– कुवलयमालाकहा (उद्द्योतनसूरि) – अनुच्छेद 1–12 तक
सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये, प्राकृत विद्या मण्डल, अहमदाबाद

इकाई दो — 20 अंक

2– समराइच्चकहा (प्रथम भव) – सम्पा. डॉ रमेश चन्द्र जैन, साहित्य भण्डार

इकाई तीन — 20 अंक

आलोचनात्मक अध्ययन एवं समीक्षा

(क) पठित ग्रंथों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन
(ख) प्राकृत कथा एवं चरित साहित्य की समीक्षा

इकाई चार — 20 अंक

वज्जालग्गं की 20 गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद
वज्जालग्गं में जीवन मूल्य – डॉ. (सोगानी) – गाथा 1 से 20

इकाई पाँच — 20 अंक

परम्परा एवं रचना अभ्यास

1. जैन धर्म एवं प्राकृत की परम्परा का परिचय (जैन धर्म, प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान) — 10 अंक

2. प्राकृत रचना सौरभ (डॉ. के. सी. सोगानी) के पाठ 1 से 61 का अभ्यास (किन्हीं पांच हिन्दी वाक्यों का प्राकृत में अनुवाद पूछना) — 10 अंक

सहायक पुस्तकें :

1 कुवलयमाला भाग–2, सम्पा. डॉ. ए.एन उपाध्ये
2 कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
3 समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ झिनकू यादव
4 हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक अनुशीलन – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
5 प्राकृत का जैन कथा साहित्य – डॉ जगदीशचन्द्र जैन
6 बृहत्कथाकोश – डॉ. ए. एन. उपाध्ये (भूमिका)
7 प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
8 प्राकृत स्वयं–शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9 प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Helpstudentpoint.com

प्रश्नपत्र द्वितीय : प्रहसन, सट्टक एवं पालि

100 अंक

इकाई एक 20 अंक

मृच्छकटिक–महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8 वां (प्राकृत अंश मात्र–गद्य एवं पद्य)

इकाई दो 20 अंक

कर्पूरमंजरी – राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य)
सम्पा. डॉ रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974

इकाई तीन 20 अंक

प्राकृत प्रयोग एवं पालि

1. संस्कृत नाटकों के प्राकृत अंशों का भाषागत परिचय–10 अंक (प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमचन्द्र जैन, में संकलित नाटकों के प्राकृत अंश)

2. धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)–10 अंक

इकाई चार 20 अंक

सट्टक साहित्य एवं पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन एवं चरित्र–चित्रण

इकाई पाँच 20 अंक

भाषागत विवेचन

1. पठित ग्रन्थों का भाषागत विवेचन एवं मागधी प्राकृत की प्रमुख विशेषताऐं – 10 अंक

2. हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं. 287–302 (प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) – 10 अंक

नोट :– छः सूत्रों को देकर तीन सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है ।

सहायक पुस्तकें :

Helpstudentpoint.com

1 महाकवि शूद्रक – डॉ रमाशंकर त्रिपाठी

2 इन्ट्रोडक्शन, स्टडी आफ मृच्छकटिकम् – डॉ. जी. वी. देवस्थली

3 कर्पूरमंजरी, स्टेनकोनो (भूमिका)

4 आचार्य राजशेखर – डॉ. श्यामा वर्मा

5 प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ जगदीश चन्द्र

6 हेमशब्दानुशासन (हिन्दी व्याख्या) – श्री प्यारचन्द महाराज

7 अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

8 प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द जैन

9 पालि साहित्य का इतिहास – भरत सिंह उपाध्याय

11 इन्ट्रोडक्शंन टू अर्धमागधी – डा. घाटगे

12 प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, तृतीय खण्ड – डा. पिशेल

13 अपभ्रंश भाषा और साहित्य – डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन

14 मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन– डॉ. फूलचन्द प्रेमी

15 रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन – डा. राजाराम जैन

प्रश्नपत्र चतुर्थ : शौरसेनी एवं महाराष्ट्री

100 अंक

(क) शौरसेनी

इकाई एक – 20 अंक

प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) – आचार्य कुन्दकुन्द गाथा 1–92 अनुवाद एवं समीक्षा

इकाई दो – 20 अंक

व्याख्या एवं समीक्षा

1– द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य)–10 अंक

2– भगवतीआराधना–षिवार्य, 1354–1433 गाथाएँ–10 अंक

Helpstudentpoint.com

इकाई तीन – 20 अंक

सर्वेक्षण एवं भाषा विवेचन

1– शौरसेनी आगम साहित्य का सवेक्षण–10 अंक

2– शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन–10 अंक
(अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10 पृष्ठ 383–99 तक)

(ब) महाराष्ट्री

इकाई चार – 20 अंक

आख्यानकमणिकोष (आम्रदेवसूरिवृत्ति) तीसरा अधिकार 15वीं कथा रोहिण्याख्यानकम्

प्रश्नपत्र तृतीय : अर्धमागधी एवं प्राकृत – अपभ्रंश कवि

100 अंक

इकाई एक – 20 अंक

आचारांगसूत्र (प्रथम श्रुत – स्कन्ध) (10+10 अंक)
नवां अध्ययन उवधान सूत्र की व्याख्या एवं प्रथम व द्वितीय अध्ययन की समीक्षा

इकाई दो – 20 अंक

उत्तराध्ययन सूत्र – 20 अंक

(1) विनय अध्ययन (1 से 48 गाथाएं)
(2) नमिप्रवज्या (1 से 62 गाथाएं)
(3) केशी गौतम अध्ययन का मूल्यांकन

इकाई तीन – 20 अंक

आगम कथा ग्रन्थ एवं सर्वेक्षण

1– नायाधम्मकहा–पांचवां थावच्चापुत अध्ययन एवं सातवां रोहिणी अध्ययन – 10 अंक

2– अर्धमागधी आगम साहित्य का सर्वेक्षण – 10 अंक

इकाई चार – 20 अंक

अर्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन, संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण।

अभिनव प्राकृत–व्याकरण पृष्ठ 409 से 430 के सम्बन्धित अंश

NOT FOR SALE
FOR OFFICE USE ONLY

इकाई पाँच – 20 अंक

प्राकृत एवं अपभ्रंश के प्रमुख कवि (10+10 अंक)
(क) महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, वट्टकेर, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवेन्द्रगणि।
(ख) स्वयम्भू, पुष्पदन्त, वीरकवि धनपाल, रइधू आदि के योगदान एवं उनके ग्रन्थों पर सामान्य प्रश्न।

सहायक पुस्तकें :–

1 प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीशचन्द जैन

2 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास – भाग 1

3 उत्तराध्ययन – एक समीक्षात्मक अध्ययन – आचार्य तुलसी

4 प्राकृत काव्य सौरभ (1975) – डॉ. प्रेम सुमन जैन

5 आगमयुग का जैन दर्शन– पं. दलसुख मालवणिया

6 जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – देवेन्द्र मुनि शास्त्री

7 आयारो– जैन विश्व भारती लाडनू (राज)

8 उत्तराध्ययनसूत्रा, तेरापंथ महासभा, कलकत्ता

9 भविसयत्तकहा एवं अन्य अपभ्रंश कथा काव्य – डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री

10 प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

Helpstudentpoint.com